मदनिका का चरित्र चित्रण
(मृच्छकटिक के आधार पर)

यह वसन्तसेना की दासी है जो शर्विलक से प्रेम करती है।
यह वसन्तसेना की सखी भी है।

1- विश्वासपात्र: मदनिका पर वसन्तसेना को बहुत अधिक विश्वास है। इसीलिए वसन्तसेना अपने और चारुदत्त के प्रेम की बात सबसे पहले मदनिका को ही बताती है। मदनिका भी कोशिश करती है कि उसकी सखी (वसन्तसेना) को अधिक से अधिक सुख प्राप्त हो।

2- सुन्दर स्वभाव: यह दासी होने भी सुन्दर स्वभाव वाली है। जब शर्विलक चारुदत्त के घर चोरी करने की बात बताता है तो यह चारुदत्त के किसी भी अनिष्ट की सम्भावना से घबड़ा जाती है। बाद में यह जानकर आश्वस्त हो जाती है कि चारुदत्त का कोई अनिष्ट नहीं हुआ है।

3- सत्परामर्शदात्री: यह सत्परामर्शदात्री है। शर्विलक ने जो गहने चारुदत्त के घर चोरी करके लाया है, यह वसन्तसेना के ही गहने हैं जो चारुदत्त के घर धरोहर के रूप में वसन्तसेना द्वारा रखा गया था। मदनिका शर्विलक को सत्परामर्श देती है कि इन गहनों को वसन्तसेना को दे देना चाहिए। इस बात को सुनकर शर्विलक मदनिका से अत्यधिक प्रभावित हो जाता है। शर्विलक उसका परामर्श मानकर चारुदत्त का आत्मीय बनकर वसन्तसेना को गहने दे देता है।

Scanned with CamScanner

4- निर्लोभता : मदनिका में अल्पमात्र लोभ नहीं है। यदि उसमें लोभ होता, तो वह शर्विलक से स्वर्ण गहने ले लेती। क्योंकि शर्विलक उसे अतिशय प्रेम करता है। वह चोरी भी मदनिका के लिए ही करता था। द्यूतकर सुनती हुई वसन्तसेना भी अतिप्रसन्न हो जाती है और मदनिका को शर्विलक की पत्नी बनाकर खुशी से उसे विदा कर देती है।

5- सुयोग्य सहभागिनी और हितकारिणी : यह मदनिका एक सुयोग्य सहभागिनी का कर्तव्य निभाती है। ~~पति~~ विदा होकर पतिगृह जाते समय मार्ग में पता चलता है कि शर्विलक के एक मित्र 'आर्यक' को बन्धक बना लिया गया है। शर्विलक धर्मसंकट में पड़ जाता है कि वह पत्नी के साथ अपने घर जाय अथवा अपने मित्र 'आर्यक' को मुक्त कराने के लिए जाय। पति शर्विलक को धर्मसंकट में पड़ा हुआ देखकर वह अकेले ही पतिगृह जाने को तैयार हो जाती है तथा अपने पति (शर्विलक) को उसके मित्र 'आर्यक' की सहायता के लिए भेज देती है। इस प्रकार वह अपने पति और उसके मित्र 'आर्यक' का हित समझकर उसमें सक्रिय सहयोग करती है।

Scanned with CamScanner